Lecture No:- (33) online class.
Date - 1/2/2022.
Time - 10:50 to 11:40 AM

Topic,

(1) yasovijaya:

Dr. Sunita Kumari
Department of Philosophy
B.A part - II (H.) paper - III (H.)
A.N.D. College Shahpur,
patory, Samastipur,

Ans:- गीता में निष्काम कर्म की व्याख्या स्पष्ट शब्दों में की गयी है। कुरुक्षेत्र के लड़ाई के मैदान में युद्ध करने आये अर्जुन को श्रीकृष्ण निष्काम कर्म की शिक्षा देते हुए एक शुद्ध कर्मयोगी के रूप में युद्ध करने को प्रेरित किया है। गीता का यह निष्काम कर्मयोगी पाश्चात्य विचारक Kant के विचार Duty for Duty's sake से साम्य रखता है। निष्काम कर्मयोगी की किसी लक्ष्य की सिद्धि हेतु कर्म करने की शिक्षा नहीं देता बल्कि कर्तव्य के लिए कर्तव्य की शिक्षा देता है। निष्काम भाव से कर्म करने की ओर

P.T.O.

प्रेरित करता है। गीता हमें यह शिक्षा देती है कि हमें न किसी फल की कामना करनी चाहिए बल्कि निष्काम भाव से किसी परिणाम की चिन्ता किये बिना कर्म करना चाहिए। जैसा कि गीता में भी कहा गया है :-

कर्मण्ये वाधिकारास्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि।।

अर्थात मुझे केवल कर्म करने का अधिकार है उसके फल पर तेरा अधिकार एकदम नहीं है, तेरा उद्देश्य कर्म का फल कभी नहीं हो और कर्म के त्याग के प्रति अनुराग ही हो। गीता का निष्काम कर्म शंकर के निवृति मार्ग से अधिक व्यवहारिक है। निवृति मार्ग सामर्थ्य संसारिक विषयों के त्याग करने में ही मानव मात्र का कल्याण समझते है।

गीता के अनुसार जिस धर्म का जो स्वभाविक कर्म है, वही

P.T.O.

उसका स्वधर्म है, स्वभाव के अनुसार जो विशेष कर्म निश्चित है। वही स्वधर्म है। स्वधर्म के पालन से मानव परम सिद्धि का भागी होता है। स्वधर्म अनुष्ठान मनुष्य के लिए कल्याणकारी है।

गीता में निष्काम कर्म को एक मध्यम मार्ग के रूप में स्वीकार किया गया है जो एक ओर को अनुसरण करता है। जहां कर्मों में प्रवृत्ति सकाम होकर रहे रहने तथा दूसरी ओर कर्म त्याग करने के बीच मध्य मार्ग का अनुसरण करता है।

प्रथम जहाँ हमें जीवन मरण चक्र में प्रवृत्ति होने की ओर प्रेरित करता है, वहाँ दूसरा सन्यास की आरोह में अनुसरण करता है। प्रवृत्ति और निवृत्ति के बीच निष्काम कर्म नहीं प्रशस्त करता क्योंकि दोनों की अच्छाईयों को प्रश्रय देता है तथा दोनों बुराईयों से ऊपर उठने का संदेश देता है। यह सांसारिक समस्याओं के बीच रहकर भी उनके दोषों से सर्वथा मुक्त बने की ओर हमें प्रेरित करता है। etc END